# 3. उत्तर भारत के राज्य (800ई से 1200 ई तक)

- उत्तर भारत के इतिहास में गुप्त शासन काल के पश्चात छोटे-छोटे राज्यों का युग आया | 750 ई से 1000 ई तक 3 बड़े राज्य उत्तर भारत पर अपना अधिकार स्थापित करने के प्रयत्न में परस्पर युद्ध करते रहें |

## कन्नौज के लिए संघर्ष

- यह नगर हर्ष की राजधानी और उत्तर भारत का एक प्रसिद्ध नगर था | उत्तर भारत में इस नगर की बड़ी अच्छी स्थिति थी क्योंकि जो इस नगर पर अधिकार कर लेता वह गंगा के मैदान पर अधिकार कर सकता था|
- तीन प्रमुख राज्य इस संघर्ष मे लगे हुए थे ये तीन राज्य राष्ट्रकूट, प्रतिहार और पाल थे | दक्षिणापथ के उत्तरी भाग में नासिक के आसपास के क्षेत्र पर राष्ट्रकूटों का शासन था और मालखेद उनकी राजधानी थी |
- प्रतिहार दक्षिण राजस्थान के कुछ भागों और अवंती पर शासन करते थे और अरबों के साथ संघर्ष में सफलता प्राप्त करके प्रतिहार अपनी सेनाओं को पूर्व की ओर ले गए और उन्होंने आठवीं शताब्दी के अंत तक कन्नौज पर अधिकार कर लिया|
- बंगाल पर शासन करने वाले पाल वंश के राजा भी कन्नौज पर अधिकार करना चाहते थे पाल वंश के राजाओं ने लगभग 400 वर्ष राज किया| संपूर्ण बंगाल और बिहार के बहुत से भाग में उनका राज्य फैला हुआ था| गोपाल, पाल वंश का पहला राजा था |

Follow us on Telegram
Gradeup PCS & Other State Exams
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now

## राजपूत

- राजपूत राजाओं ने अपने वंशों के इतिहास लिखवाए जिनमें उनका संबंध प्राचीन सूर्यवंशी या चंद्रवंशी राजाओं से जोड़ा गया किंतु चार ऐसे राजपूत वंश भी थे जो अपने को इन दो प्राचीन वंशों का उत्तराधिकारी नहीं कहते थे | वे अपने को अग्निकुल का बतलाते थे | ये चारों वंश इस काल के इतिहास में सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं| वे प्रतिहार, चौहान, सोलंकी और पवार(परमार) थे |
- अग्निकुल के इन चार राजपूत राज्यों ने पश्चिमी भारत, राजपूताना और मध्य भारत के कुछ भागों में अपने राज्य स्थापित किए | परिहार कन्नौज क्षेत्र पर शासन करते थे राजपूतों के मध्य भाग में चौहानों का शक्तिशाली राज्य था | कठियावाड़ और उसके आसपास के क्षेत्र में सोलंकियों का शक्ति का उदय हुआ| पंवारों ने इंदौर के निकट धार को अपनी राजधानी बनाकर मालवा प्रदेश में अपना राज्य स्थापित किया|
- तोमरों ने सन 736 ईसवी में दिल्ली का नगर का निर्माण कराया | बाद में चौहानों ने तोमरों को पराजित करके उनके राज्य को अपने राज्य में मिला लिया|

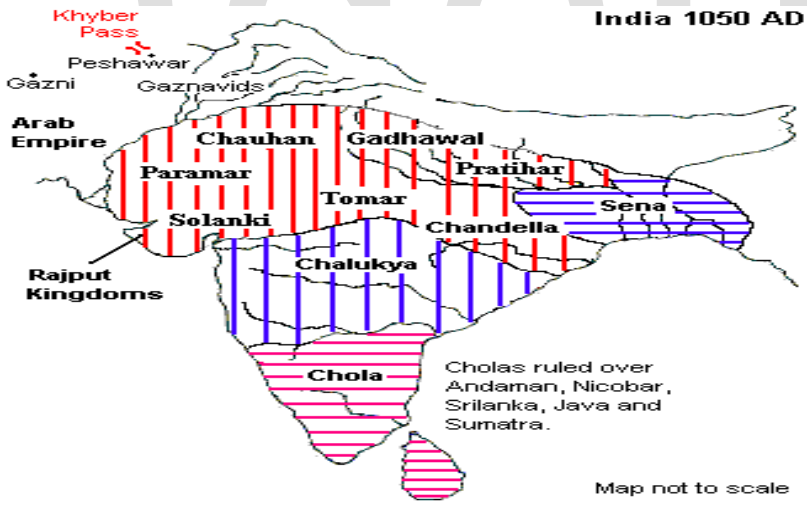


## महमूद गजनवी

- गजनवी, अफगानिस्तान का एक छोटा सा राज्य था | एक सरदार ने 10वीं शताब्दी में इस राज्य की स्थापना की थी, उसके अधिकारियों में एक महमूद था| वह गजनी को एक बड़ा शक्तिशाली साम्राज्य बनाना चाहता था| उसके लिए धन की आवश्यकता थी अतः उसने धन प्राप्त करने के लिए भारत पर आक्रमण करने की योजना बनाई|

Follow us on Telegram
Gradeup PCS & Other State Exams
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now

- पहला आक्रमण 1000 ईसवी में आरंभ हुआ | 25 वर्षों के थोड़े से समय में महमूद ने पर भारत पर 17 आक्रमण किए इस बीच उसने मध्य एशिया और अफगानिस्तान में भी लड़ाइयां लड़ी|
- 1010 और 1025 ईस्वी के बीच महमूद ने उत्तर भारत के केवल उन नगरों पर आक्रमण किया जिनमें बहुत से मंदिर थे| उसके आक्रमणों में से पश्चिमी भारत के सोमनाथ के मंदिर पर आक्रमण और विनाश का सबसे अधिक उल्लेख किया जाता है|
- यद्यपि भारत में महमूद ने विनाश करने का ही कार्य किया परंतु अपने देश में उसने एक बड़ी सुंदर मस्जिद और एक बड़ा पुस्तकालय बनवाया | शाहनामा नामक महाकाव्य का लेखक फिरदौसी उसी के संरक्षण में रहा| उसी ने मध्य एशिया के प्रसिद्ध विद्वान अलबेरूनी को भारत भेजा|

## मुहम्मद गौरी

- मुहम्मद गौरी (12 वीं शताब्दी) भारत पर सबसे महत्वपूर्ण आक्रमण चौहान शासक पृथ्वीराज तृतीय पर हुआ | 1192 ईसवी मे मुहम्मद ने उसको तराइन की दूसरी लड़ाई में पराजित किया| इससे दिल्ली का क्षेत्र मुहम्मद के अधिकार में आ गया और वह अपनी शक्ति को बढ़ाने लगा| किंतु सन 1206 ईस्वी में मुहम्मद की हत्या कर दी गई| और उत्तर भारत में उसका राज्य कुतुबुद्दीन ऐबक के अधिकार में आ गया|

## आर्थिक व्यवस्था

- मध्यकाल में लगान को वसूल करने की वह प्रणाली नहीं रही जो प्राचीन काल से चली आ रही थी अब लगान पर राजा का सीधा अधिकार नहीं रहा|
- मध्यकाल में ऐसे अनेक अधिकारी उस भूमि भाग पर अपना स्वामित्व भी समझने लगे जो वेतन की बजाय भूमि के लगान वसूल करने का अधिकार देकर वेतन देने की प्रणाली मध्यकाल में बढ़ गई| इस प्रकार लगान वसूल करने का अधिकार पाने वाला राय या ठाकुर कहलाते थे|
- यह अनेक प्रकार के होते थे इनमें से कुछ तो राजकीय अधिकारी थे और कुछ वे स्थानीय सरदार थे जिनको युद्ध में पराजित कर दिया गया था पर उनको अनुदान के रूप में भूमि पर अधिकार मिला हुआ था| अनुदानित व्यक्ति का दूसरा बड़ा समुदाय ब्राह्मणों और विद्वानों का था जिनको वास्तव में भूमि तो मिली हुई थी| साथ ही उस

Follow us on Telegram
Gradeup PCS & Other State Exams
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now

भूमि के लगान को वसूल करने का अधिकार भी मिला हुआ था| इस प्रकार के अनुदान अग्रहार या ब्रह्मदेय अनुदान कहलाते थे|

## समाज

- यद्यपि राजा की राजनीतिक और आर्थिक शक्ति प्राचीनकाल के मुकाबले में बहुत कम हो गई फिर भी वह बड़ी शान-शौकत से रहता था| उसकी आमदनी का बहुत सा धन राजमहलों और मदिरों के निर्माण में व्यय होता था|
- राजा के दरबार में केवल सामंत ही नहीं, धनवान ब्राह्मण भी उपस्थित होते थे ब्राह्मण में से बहुत से धनवान और शक्तिशाली होते थे| क्योंकि उनको भी अनुदान में भूमि प्राप्त थी|
- भारत में बनी हुई वस्तुएं पूर्वी अफ्रीका के नगरों में भी बिक्री के लिए भेजी जाती थी| केसर, रेशम, रुई, ऊनीवस्त्रों, सुगन्धित लकड़ी(चन्दन) और मसलों का निर्यात होता था| भारत में विदेशों से घोड़े मंगाए जाते थे| पश्चिम एशिया से खजूर और शराब का बहुत बड़ी मात्रा में आयात होता था|
- समाज के सभी वर्गों में शूद्रों का जीवन सबसे अधिक कष्टपूर्ण था उनमें से अधिकांश किसान थे| इस कारण वे सबसे अधिक गरीब थे| यूरोप और चीन के किसानों का भी जीवन बड़ा कष्टपूर्ण था| वे अन्न का उत्पादन करते थे और इस कारण सबको उन पर निर्भर रहना पड़ता था फिर भी उनको समाज में कोई अधिकार प्राप्त नहीं थे |

## शिक्षा और ज्ञान

- ब्राह्मणों पर धार्मिक कर्मकांड को करने का ही नहीं बल्कि शिक्षा देने का भी उत्तरदायित्व था| मंदिरों में स्कूल लगते थे और वहां ऊंची जातियों के बच्चों को शिक्षा दी जाती थी|
- नालंदा (बिहार) में एक प्रसिद्ध बौद्ध मठ और विश्वविद्यालय था | गुप्त काल में सभी विषयों पर विशेषकर विज्ञान के अध्ययन में विशेष रुचि दिखाई गई थी| पर अब परिस्थिति बदल चुकी थी विज्ञान के अध्ययन के प्रति रुचि कम हो गई थी|
- अब भी ज्ञान और साहित्य की भाषा संस्कृत थी| इस काल की सबसे अधिक लोकप्रिय पुस्तक 'कथा सरित्सागर' थी यह एक कहानी संग्रह है| राजाओं के जीवन चरित्र भी लिखे जाते थे| विल्हण ने 'विक्रमांकदेव-चरित' की रचना की| कल्हण ने 'राजतरंगिणी' नामक कश्मीर का संसार प्रसिद्ध इतिहास 12 वीं शताब्दी में लिखा|

Follow us on Telegram
Gradeup PCS & Other State Exams
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now

- उत्तर भारत में कृष्ण की उपासना का प्रचार बढ़ा और राधा कृष्ण की प्रेम कथा बड़ी लोकप्रिय हो गई | इस कथा के आधार पर बहुत सी कविताएं लिखी गई जयदेव का 'गीत गोविंद' उनमें से एक है|

## धर्म

- दक्षिण भारत के तमिल भक्त संतों ने इस भावना को आरंभ किया और धीरे-धीरे यह भावना उत्तर भारत में भी फैलने लगी| भक्त उपदेशक क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग करते थे क्योंकि वे निम्न वर्ग के लोगों, नगर के शिल्पकारो और गांव के किसानों को उपदेश देते थे|
- उत्तर भारत में वैष्णव और शैव दोनों संप्रदायों को मानने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में थे| विष्णु की उपासना का सर्वश्रेष्ठ रूप उनका कृष्ण का अवतार था |

## वास्तुकला और चित्रकला

- इस काल के बने हुए सैकड़ों छोटे-बड़े मंदिर हैं | उड़ीसा के पुरी और भुवनेश्वर के मंदिर तथा कोणार्क का सूर्य मंदिर सबसे अधिक प्रसिद्ध व प्रभावोत्पादक मंदिर है| चंदेल राजाओं ने मध्य भारत में खजुराहो के मंदिर बनवाए |
- राजस्थान में आबू पर्वत पर बने सफेद संगमरमर के जैन मंदिरों का एक समूह है | हिंदुओं के लगभग सभी मंदिरों में विष्णु और शिव की मूर्तियां थी |
- पाल वंश के राजा हिंदू और बौद्ध दोनों धर्मों के संरक्षक थे| उनके मंदिरों में कांसे की अथवा स्थानीय काले पत्थर की बनी देवी-देवताओं की अनेक मूर्तियां सुशोभित थी|
- वास्तुकला और मूर्तिकला के अतिरिक्त इस साल में चित्रकला का भी विकास हुआ जो, बाद में मुगल काल में बड़ी लोकप्रिय हुई |

Follow us on Telegram
Gradeup PCS & Other State Exams
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now